

स्थानीय स्वशासन

कक्षा 6 सामाजिक विज्ञान

Complete Study Notes

सीखने के उद्देश्य

इस अध्याय में विद्यार्थी स्थानीय स्वशासन की अवधारणा तथा उसके महत्व को समझेंगे। वे ग्रामीण क्षेत्रों की पंचायती राज व्यवस्था, शहरी स्थानीय निकायों की संरचना एवं कार्यों का अध्ययन करेंगे तथा जानेंगे कि स्थानीय स्वशासन लोकतंत्र को मजबूत बनाने और स्थानीय विकास में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

परिचय

स्थानीय स्वशासन वह व्यवस्था है जिसके अंतर्गत गाँवों, कस्बों और शहरों के लोग अपने स्थानीय प्रशासन और विकास में सीधे भाग लेते हैं। इससे स्थानीय समस्याओं का समाधान शीघ्र होता है तथा विकास कार्य अधिक प्रभावी ढंग से किए जा सकते हैं।

भारत में स्थानीय स्वशासन को ग्रामीण स्थानीय निकाय (पंचायती राज व्यवस्था) तथा नगरीय स्थानीय निकाय (नगर प्रशासन) में विभाजित किया गया है। इन संस्थाओं के माध्यम से नागरिक अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं और लोकतंत्र को मजबूत बनाते हैं।

पंचायती राज व्यवस्था

पंचायती राज ग्रामीण क्षेत्रों की स्थानीय शासन व्यवस्था है। इसका उद्देश्य गाँवों का विकास करना तथा लोगों की निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करना है। भारत में पंचायती राज व्यवस्था का शुभारंभ 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के नागौर जिले से हुआ था।

इस व्यवस्था के तीन स्तर हैं। ग्राम पंचायत गाँव स्तर पर कार्य करती है, पंचायत समिति प्रखंड (ब्लॉक) स्तर पर तथा जिला परिषद जिला स्तर पर कार्य करती है। ये तीनों संस्थाएँ मिलकर ग्रामीण विकास और जनकल्याण के कार्यों का संचालन करती हैं।

ग्राम पंचायत और ग्राम सभा

ग्राम पंचायत ग्रामीण प्रशासन की सबसे छोटी इकाई है। इसमें मुखिया और वार्ड सदस्य जैसे निर्वाचित प्रतिनिधि होते हैं, जो गाँव के विकास कार्यों का संचालन करते हैं। वे सड़क, पेयजल, स्वच्छता, शिक्षा तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी निभाते हैं।

ग्राम सभा गाँव के सभी वयस्क मतदाताओं से मिलकर बनती है। यह विकास योजनाओं पर चर्चा करती है, सार्वजनिक धन के उपयोग की निगरानी करती है तथा प्रशासन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करती है। पंचायत सचिव बैठकों का संचालन और अभिलेखों का रख-रखाव करता है।

नगरीय स्थानीय निकाय

शहरी क्षेत्रों का प्रशासन नगर निगम, नगर परिषद तथा नगर पंचायत द्वारा संचालित किया जाता है। इनका गठन क्षेत्र की जनसंख्या और विकास के आधार पर किया जाता है।

ये संस्थाएँ स्वच्छ पेयजल, सफाई व्यवस्था, कचरा प्रबंधन, सड़क निर्माण, स्ट्रीट लाइट, सार्वजनिक परिवहन, स्वास्थ्य सेवाएँ, अग्निशमन सेवा तथा जन्म और मृत्यु प्रमाण-पत्र जारी करने जैसी नागरिक सुविधाएँ उपलब्ध कराती हैं। स्थानीय विकास कार्यों के लिए ये विभिन्न प्रकार के कर भी एकत्र करती हैं।

स्थानीय स्वशासन का महत्व

स्थानीय स्वशासन लोगों को अपने क्षेत्र के विकास और निर्णय प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्रदान करता है। इससे प्रशासन अधिक उत्तरदायी बनता है, सार्वजनिक सेवाओं में सुधार होता है तथा स्थानीय समस्याओं का समाधान शीघ्र किया जा सकता है।

जमीनी स्तर का लोकतंत्र: स्थानीय स्वशासन को जमीनी स्तर का लोकतंत्र भी कहा जाता है क्योंकि इसमें नागरिक सीधे अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं और स्थानीय प्रशासन में भाग लेते हैं। इससे विकास योजनाएँ लोगों की आवश्यकताओं के अनुसार बनाई और लागू की जाती हैं। यह व्यवस्था लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत बनाती है तथा समाज के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

अभ्यास प्रश्न

- स्थानीय स्वशासन क्या है?
- पंचायती राज व्यवस्था के तीन स्तरों के नाम लिखिए।
- ग्राम सभा की क्या भूमिका है?
- नगरीय स्थानीय निकायों के तीन प्रकार लिखिए।
- स्थानीय स्वशासन का महत्व क्या है?

उत्तर

- उत्तर 1:** स्थानीय स्वशासन वह व्यवस्था है जिसमें स्थानीय लोग अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करके गाँव, कस्बे और शहर के प्रशासन तथा विकास का संचालन करते हैं।
- उत्तर 2:** पंचायती राज व्यवस्था के तीन स्तर हैं—ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद।
- उत्तर 3:** ग्राम सभा गाँव के सभी वयस्क मतदाताओं से मिलकर बनती है। यह विकास योजनाओं को स्वीकृति देती है, सार्वजनिक धन की निगरानी करती है तथा प्रशासन में पारदर्शिता सुनिश्चित करती है।
- उत्तर 4:** नगरीय स्थानीय निकायों के तीन प्रकार हैं—नगर निगम, नगर परिषद और नगर पंचायत।
- उत्तर 5:** स्थानीय स्वशासन लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ावा देता है, स्थानीय समस्याओं का शीघ्र समाधान करता है, सार्वजनिक सेवाओं में सुधार लाता है तथा क्षेत्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।